आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. . RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण: - कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2553 • उदयपुर, मंगलवार 21 दिसम्बर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

आशा की निराशा पर जीत

जिन्दगी वास्तव में संघर्ष का ही दूसरा नाम है। जो संघर्षों से हार गया, समझो वह जिन्दगी ही हार गया। जिसने कठिनाइयों पर नियन्त्रण कर लिया, उसके लिए सफलता की राहें स्वतः खुलने लगती हैं। उदयपुर जिले के आदिवासी बहुल उपखंड ऋषभदेव के गांव गरनाला की आशा देवी का जीवन भी संघर्ष का पर्याय ही रहा। लेकिन उसने हार नहीं मानी और हालात से लड़ते हुए आगे बढ़ती रही। आशा देवी करीब तीन वर्ष की थी तभी जलते चूल्हे के पास खेलते हुए उसमें गिर पड़ी और बुरी तरह झुलस गई। चेहरे सहित पूरा शरीर इस कदर झुलसा था कि बचने की उम्मीद नहीं थी। गरीब मां–बाप ने जैसे–तैसे कर्ज लेकर इलाज करवाया, जो दो तीन साल तक चला। आशा को लगा कि अब वह मां–बाप पर बोझ ही रहेगी लेकिन कब तक उम्र बढने के साथ–साथ उसने अपना हौसला भी बढ़ाया और जिद करके पढ़ाई शुरू की। जो हिम्मत करते हैं, ईश्वर भी उनका साथ देते हैं। ऐसा ही आशा के साथ हुआ। वह क्लास दर क्लास आगे बढ़ती गई और कॉलेज तक पहुंच गई। इसी दौरान २०१८ में नारायण सेवा संस्थान द्वारा आयोजित निःशुल्क निर्धन एवंदिव्यांग सामूहिक विवाह में उसने दिनेश मीणा नामक युवक के साथ फेरे लिये।

गृहस्थी अच्छे से चल रही थी। दम्पती को एक बेटा भी नसीब हुआ। समय ने फिर करवट ली। सन् 2021 में आशा का पति कोरोना का शिकार हो गया। इलाज के बावजूद मई में उसकी मृत्यु हो गई। आशा पर फिर निराशा ने डेरा डाल दिया। वह बेसहारा हो गई। बच्चे के पालन–पोषण की जिम्मेदारी से वह दुःखी रहने लगी। उसकी इस हालत के बारे में संस्थान को पता चलने पर उसे हर माह राशन भिजवाया गया। संस्थान ने आशा को उसके पांवों पर खड़ा करने के लिए अक्टूबर के तीसरे सप्ताह मे उसके गांव में नारायण किराणा स्टोर दुकान लगाकर दी। जिसमें किराणे का हर तरह का सामान भरा गया। आशा अब दुकान चलाती है। पढ़ी–लिखी होने के कारण आमद–खर्च का हिसाब रखती है। व्यवहार कुशल होने से लोग उसके यहीं से सामान लेते हैं। अब वह खुश है। संघर्ष से लड़ाई में वह जीत गई।

रागिनी को मिलेगी रफ्तार

छोटेलाल साहू बिहार की गोपालगंज तहसील के डोरापुर गांव में रहते हैं। इनके घर बेटी के रूप में पहली संतान ने जन्म लिया। लक्ष्मी रूप मानकर पूरे परिवार ने खुशियां मनाई। लक्ष्मी के आने के बाद परिवार की माली हालत भी सुधरी।

साहू ने मजदूरी छोड़ खुद फल बेचने का धंधा शुरू कर दिया। बालिका का नाम रागिनी रखा गया। वह ज्यों–ज्यों बड़ी होती गई, उसका दांया पांव घुटने से नीचे मुड़ता गया। उसे खड़ी होने में भी परेशानी होने लगी। माता–पिता को चिंता होने लगी। वे घर में ही मालिश करते रहे और आसपास के डॉक्टरों को भी दिखाया लेकिन कोई माकूल उपचार न हो सका।

रागिनी को चार–पांच वर्ष की होने के बाद स्कूल में दाखिल करवाया गया। स्कूल ले जाना और लाना पिता अथवा माता की रोज की जिम्मेदारी थी। रागिनी पढने में होशियार है और वह इस समय नवीं क्लास की छात्रा है। इसी दौरान साहू के परिवार ने एक बेटे और एक बेटी ने और जन्म लिया। वे दोनों ही सामान्य हैं।

रागिनी पढ़–लिखकर बहुत आगे जाना चाहती है लेकिन जब वह अपने पांव की तरफ देखती तो निराश होकर रो पड़ती थी। सन् 2013 में सोशल मीडिया के माध्यम से नारायण सेवा संस्थान में इस प्रकार की शारीरिक जटिलताओं के निःशुल्क ऑपरेशन और उपचार के बारे में पता लगने पर पिता रागिनी को लेकर उदयपुर आए। यहां डॉक्टरों ने जांच के बाद तत्काल ऑपरेशन की सलाह न देकर तीन वर्ष बाद की तारीख दी।

सन् 2018 में ये वापस आए तब कुछ दिन यहां रोककर गहनता से परीक्षण किया गया तो पाया गया कि ऑपरेशन के बाद इनके पांवों में एक उपकरण लगाया जाएगा किन्तु उसके लिए भी अभी इन्तजार करना होगा। इनके 2021 में आने पर 20 अगस्त को डॉ. अंकित चौहान ने रागिनी के पांव का सफलतापूर्वक ऑपरेशन कर उसके पांव में इल्याजारो नामक उपकरण लगाया। पिता छोटेलाल साहू ने बताया कि चार माह के आराम के बाद रागिनी अब चलने का अभ्यास करने लगी है और उन्हें उम्मीद है कि वह पहले से अच्छी स्थिति में होगी और अपने सपनों को पूरा करेगी। वे संस्थान को निःशुल्क उपचार के लिए धन्यवाद देते हैं।

टीना थामेगी अब कलम

भोपाल (मध्यप्रदेश) के सूखी सेवनिया कस्बे को अब अन्य बच्चों की तरह अपने हाथ में भी पकड़ सकेगी कलम और लिखेगी अपने सुखद भविष्य की इबारत। इस बालिका के जन्म से ही दांए हाथ का पंजा (हथेली) विकसित नही हुई थी। सिर्फ कलाई पर नन्हीं– नन्ही उंगलियां थी। माता–पिता व बबलू कुशवाह बच्ची की इस जन्मजात कमी से काफी दुःखी थे। जनवरी 2021 में भोपाल में संस्थान की ओर से कृत्रिम अंग (हाथ–पैर) माप शिविर भोपाल उत्सव समिति के तत्वावधान में आयोजित हुआ। जिसमें माता–पिता टीना को लेकर गए जहां उसके लिए कोहनी तक कृत्रिम हाथ बनाने का माप लिया गया। 6 माह बाद 25 जून 2021 को यह हाथ टीना को लगा दिया गया।

हाथ लगाने के साथ ही संस्थान में उसकी माता को इस बात का प्रशिक्षण भी दिया गया कि हाथ का संचालन और रख–रखाव किस प्रकार होगा। टीना और माता–पिता अब बेहद खुश हैं। टीना कहती है कि अब वह खुशी–खुशी स्कूल जाएगी और खूब लिख–पढ़ कर जिंदगी के लम्बे सफर को सुखद बनाएगी।

नारायण सेवा निहाल हो गई

जन्म के 6 महीने बाद ही पोलियोग्रस्त हो गई। चारों हाथ–पैरों से चलती थी। टी.वी. पर संस्थान में दिव्यांगों के सफल ऑपरेशन की जानकारी प्राप्त कर श्री धर्मेन्द्र कुमार (बलसरा, झारखण्ड) प्रियंका को लेकर संस्थान में आये।

ऑपरेशन की तारीख मिलने पर वे प्रियंका को लेकर पुनः संस्थान में आये, जहां प्रियंका के 4 सफल ऑपरेशन सम्पन्न हुए। अब प्रियंका दिव्यांगता से मुक्त होकर कैलिपर्स के सहारे चलने फिरने में सक्षम होकर प्रसन्न हैं। श्री धर्मेन्द्र कहते हैं– "मेरे जैसे गरीब की यह खुशनसीबी है कि ऑपरेशन, दवाइयों का खर्च, रहना, खाना सभी कुछ निःशुल्क मिला और – मेरे घर से भी अच्छा आराम यहां मिला है।"

जन्म के छः माह बाद बुखार में घनश्याम (पीलगांव, महाराष्ट्र) का पांव पोलियाग्रस्त हो गया। परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होते हुए भी महाराष्ट्र एवं आन्ध्रप्रदेश सहित कई स्थानों पर इलाज के लिए दिखाया, लेकिन सब कोशिशें बेकार रही। टी.वी. पर संस्थान का कार्यक्रम देखकर घनश्याम अपने बड़े भाई के साथ संस्थान पहुंचा।

संस्थान के चिकित्सकों द्वारा घनश्याम के पांव की जांच की गई, जब घनश्याम के पांव का सफल ऑपरेशन हुआ। घनश्याम की आंखों में खुशी के आंसू छलक पड़े जब वह कैलिपर्स पहन कर अपने पावों पर चलने लगा। ऐसे एक–दो नहीं लाखों से अधिक दिव्यांगों को अपने पावों पर खड़ा किया है आपके इस संस्थान ने। यह सब आपके आर्थिक सहयोग से ही संभव हो पाया है।

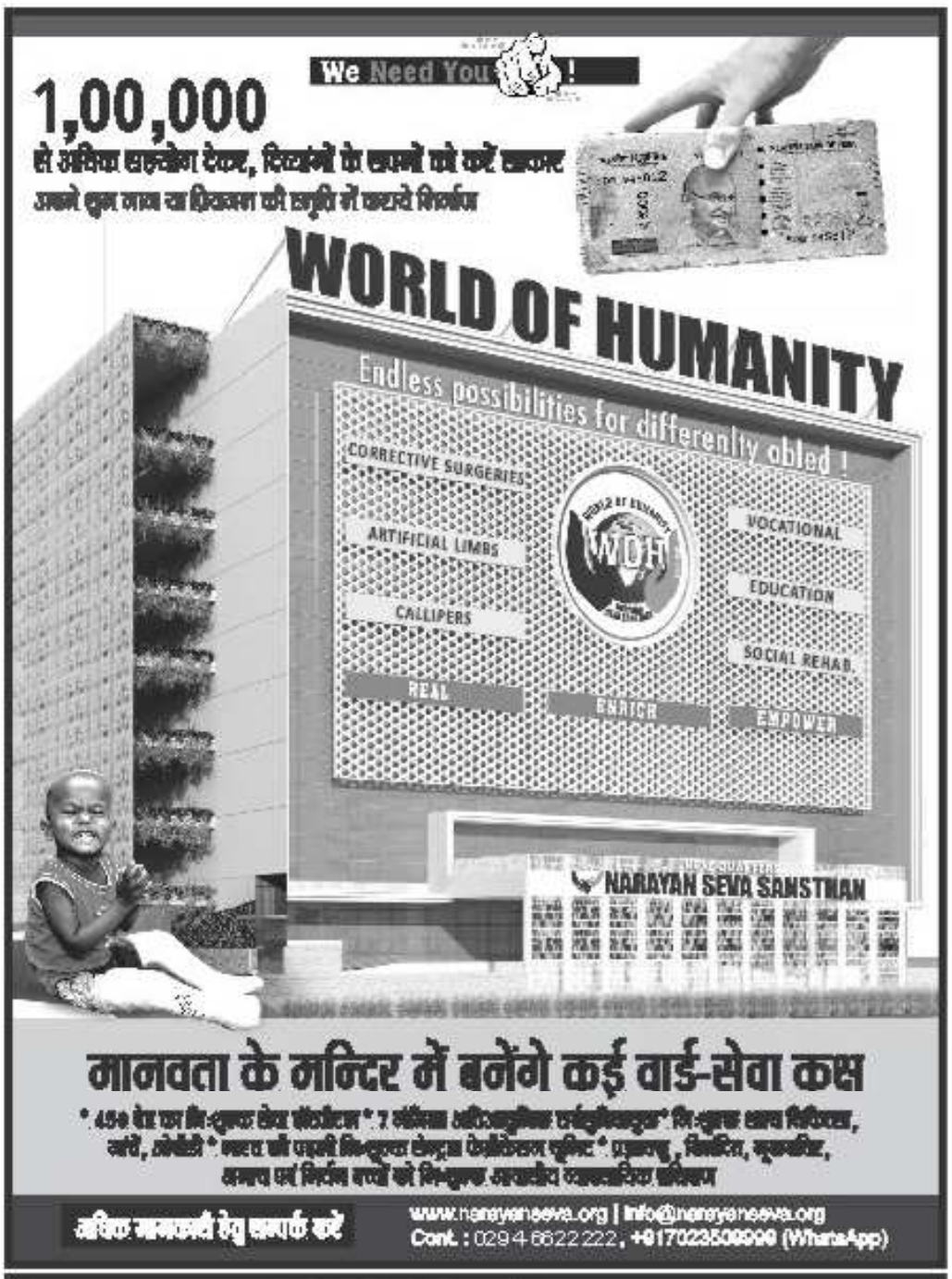

सेवा - स्मृति के क्षण

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

एक वकील ऑफिस में बैठे,
सोच रहे थे अपने दिल।
फला दफा पर बहस करूंगा,
प्वाईन्ट मेरा है बड़ा प्रबल।।
उधर कटा वारंट मौत का,
कल की पेशी पड़ी रही।
परदेशी तो हुआ रवाना,
प्यारी काया पड़ी रही।।

प्यारी काया पड़ी रहेगी। मंथरा का कोई नाम नहीं रखता। कोई अपनी बेटी का नाम मंथरा रखता है तो बताओ ? मैंने तो नहीं सुना। हाँ दुर्गावती मिलती है, लक्ष्मीबाई मिलती है।

खूब लड़ी मर्दानी वो तो, झांसी वाली रानी थी।
बुन्देलों हरबोलों के मुँह, हमने सुनी कहानी थी।।

मीराबाई मिलती है। हाँ, गिरधर म्हाने चाकर राखो जी। सेवा में चाकर ही बनना है। देखो ये केला। एक केले का ये दसवां हिस्सा इतना, इसका भी आधा। ये बीज बोया गया था। सत्कर्मों का बीज। ये पुण्य का बीज, ये आनन्द का बीज, ये किसी की भलाई का बीज।

अच्छे बीज जो डाले,
अच्छी फसल को पाये।
आओ भावक्रान्ति को फैलाय।।
ये पराये आँसू को पौछने का बीज
है सभी बन्दे प्रभु के।
बन्दगी उनकी करो।
प्रेम की बोओ फसल।
आनन्द फल फिर बाँट लो।।

जैसा बोयेंगे वैसा काटेंगे। एक बीज बोया गया केले का इतना छोटा सा, और झुण्ड के झुण्ड केले आ गये।

जो इतना अच्छा कार्य नारायण संस्थान ने प्रारम्भ किया। हरेक प्राणी के अन्दर भगवान को देखना। किसी महापुरूष ने कहा है– अगर आप किसी की खुषियाँ पेन, पेन्सिल बन के लिख नहीं सकते। कम से कम रबड़ बन के दूसरों के दुःख को मिटा तो सकते हो।

सम्पादकीय

हिम्मत या साहस वह मनोभाव है जो व्यक्ति में जब प्रकट होता है तो उसे शरीर से समर्थ, मन से मजबूत और भावों से भरा–भरा सा कर देता है। किसी ने कवि ने कहा भी है – 'बिन हिम्मत कीमत नहीं।' सच ही तो है कि जिसमें हिम्मत नहीं वह क्या काम का ? हिम्मत केवल हमें संकटों से पार ही नहीं करती वरन् जीन की कला भी सिखाती है। जो इंसान भौतिक रूप से भले ही हार गया हो, पर यदि उसने हिम्मत नहीं हारी तो कभी भी खड़ा होकर विजय को गले लगा सकता है। एक प्रचलित कहावत है – हिम्मते मर्दा, मददे खुदा।' यानी ईश्वर भी उन्हीं की सहायता करेगा जिसमें हिम्मत शेष है। जिसने हिम्मत हार ली उसके लिए तो ईश्वरीय सहयोग भी निर्मूल्य ही है। यदि कोई धारा हमें किनारे तक जाने में बाधा बनी खड़ी हो तब कोई कवि कहता है – हिम्मत से पतवार संभालो, फिर क्या दूर किनारा।' वस्तुतः व्यक्ति पार जाने के लिए भले ही बाहुबलया संसाधन का सहारा ले परन्तु असली ताकत तो हिम्मत ही होती है। वही हिम्मत अभावों में भी संघर्ष की प्रेरणा देती है।

कुछ काव्यमय

मन की तरंगें जब,
सेवा के तुरंग पर चढ़कर,
सैर करने निकलती है।
तो करुणा की भावनाएं
साथ–साथ चलती है।
तब होता है,
सेवा का अनुष्ठान।
तभी समाविष्ट होते हैं
भक्त में भगवान।

- वरदीचन्द राव

हक की रोटी

एक राजा के यहां एक संत आए। प्रसंगवश बात चल पड़ी हक की रोटी की। राजा ने पूछा– 'महाराज! हक की रोटी कैसी होती है?' महात्मा ने बतलाया कि 'आपके नगर में अमुक जगह अमुक बुढ़िया रहती है, उसके पास जाकर उसे पूछा जाए और उससे हक की रोटी मांगी जाए। राजा पता लगाकर उस बुढ़िया के पास पहुंचे और बोले–माता मुझे हक की रोटी चाहिये।' बुढ़िया ने कहा–'राजन! मेरे पास एक रोटी है, पर उसमें आधी हक की है और आधी बेहक की।' राजा ने पूछा– 'आधी बेहक की कैसे?' 'बुढ़िया ने बताया– 'एक दिन मैं चरखा कात रही थी। शाम का वक्त था। अंधेरा हो चला था। इतने में उधर से एक जुलूस निकला। उसमें मशालें जल रही थी।

मैं अपना चिराग न जलाकर उन मशालों की रोशनी में सूत कातती रही और मैंने आधी पूनी कात ली। आधी पूनी पहले की कती थी। उस पूनी से आटा लाकर रोटी बनायी। इसलिये आधी रोटी तो हक की है और बेहक की। इस आधी पर उन जुलूस वालों का हक है।' राजा ने उसकी बात सुनकर बुढ़िया को सिर नवाया।

अपनों से अपनी बात

अहंकार के रोग से बचें

धनुर्विद्या के कई मुकाबले जीतने के बाद एक युवा धुरंधर को अपने कौशल पर घमंड हो गया। उसने एक पहुंचे हुए गुरु को मुकाबले के लिए चुनौती दी। गुरु स्वयं बहुत प्रसिद्ध धनुर्धर थे। युवक ने अपने कौशल का प्रदर्शन करते हुए दूर एक निशाने पर अचूक तीर चलाया। उसके बाद उसने अहंकारपूर्वक गुरु से पूछा, "क्या आप ऐसा कर सकते हैं?" गुरु इससे विचलित नहीं हुए और युवक को अपने पीछे–पीछे पहाड़ पर चलने के लिए कहा। युवक समझ नहीं पा रहा था कि गुरु के मन में क्या था ? इसलिए वह उनके साथ चल दिया। पहाड़ पर चढ़ने के बाद वे एक ऐसे स्थान पर आ पहुंचे, जहां दो पहाड़ों के बीच गहरी खाई पर एक कमजोर सा रस्सियों का पुल बना हुआ था। पहाड़ पर तेज हवाएं चल रही थी और पुल बेहद खतरनाक तरीके से डोल रहा था। उस पुल के ठीक बीचों बीच जाकर गुरु ने बहुत दूर एक वृक्ष को निशाना लगाकर तीर छोड़ा, जो बिल्कुल सटीक लगा। पुल से बाहर आकर गुरु ने युवक से कहा, "अब तुम्हारी बारी है।" यह कहकर गुरु एक और खड़े हो गए। भय से कांपते–कांपते युवक ने स्वयं को जैसे–तैसे उस पुल पर किसी तरह से पैर जमाने का प्रयास किया। पर वह इतना घबरा गया था कि पसीने से भीग चुकी उसकी हथेलियों से उसका धनुष फिसल कर खाई में समा गया। गुरु बोले, "इसमें कोई संदेह नहीं है

कि धनुर्विद्या में बेमिसाल हो, लेकिन उस मन पर तुम्हारा कोई नियंत्रण नहीं जो किसी तीर को निशाने से भटकने नहीं देता।"

बंधुओं! अहंकार खतरनाक है। इससे सदैव बचें। संसार में आज भी ज्यादातर लोग इस रोग के शिकार हैं। धन, पद, जाति, धर्म अथवा और किसी बात का अहंकार व्यक्ति को सार्थक जीवन में भटकाव ही पैदा करता है। अहंकार के कारण व्यक्ति ही स्वयं को नहीं जान पाता तो वह ईश्वरीय सत्ता का अनुभव कैसे कर पाएगा। अहं से अहं का नाश नहीं होता। अहं के पीछे अहंजन्य कारण ही होते हैं। अहंकार द्वारा शारीरिक क्रियाओं– लक्षणों में परिवर्तन, रासायनिक स्राव में परिवर्तन, पारिवारिक संबंधो में परिवर्तन, मानसिक चिंतन और सामाजिक सरोकारों में परिवर्तन होने लगता है। इस प्रकार अहं का दायरा बहुत व्यापक है। अहं हमारे स्थूल व्यक्तित्व का एक पुर्जा हैं। जिसके परमाणु हमारे शरीर में व्याप्त हैं। हमें उन परमाणुओं का संप्रेक्षण कर अहं के स्रावों को मिटाना है।

–कैलाश 'मानव'

अंधा घोड़ा

सही स्थान पर बोया गया
सुकर्म का बीज ही,
महान फल देता है।

शहर के नजदीक एक फार्म हाउस में दो घोड़े रहते थे। दूर से वे दोनों बिल्कुल एक जैसे दिखते थे, पर पास जाने पर पता चलता था कि उनमें से एक घोड़ा अंधा है, पर अंधा होने के बावजूद फार्म के मालिक ने उसे वहाँ से निकाला नहीं था, बल्कि उसे और भी अधिक सुरक्षा और आराम के साथ रखा था।

अगर कोई थोड़ा और ध्यान देता तो उसे ये भी पता चलता कि मालिक

ने दूसरे घोड़े के गले में एक घंटी बाँध रखी थी जिसकी आवाज सुनकर अंधा घोड़ा उसके पास पहुँच जाता और उसके पीछे–पीछे बाड़े में घूमता। घंटी वाला घोड़ा भी अपने अंधे मित्र की परेशानी समझता, वह बीच–बीच में पीछे मुड़कर देखाता और इस बात को सुनिश्चित करता कि कहीं वह रास्ते से भटक ना जाए।

वह ये भी सुनिश्चित करता कि उसका मित्र सुरक्षित वापस अपने स्थान पर पहुँच जाए और उसके बाद ही वह अपनी जगह की ओर बढ़ता। दोस्तों, बाड़े के मालिक की तरह ही भगवान हमें बस इसलिए नहीं छोड़ देते कि हमारे अन्दर कोई दोष या कमियाँ हैं।

वे हमारा ख्याल रखते हैं और हमें जब भी जरूरत होती है तो किसी ना किसी को हमारी मदद के लिए भेज देते हैं।

कभी–कभी हम वो अंधे घोड़े होते हैं, जो भगवान द्वारा बाँधी गई घंटी की मदद से अपनी परेशानियों से पार पाते हैं, तो कभी हम अपने गले में बंधी घंटी द्वारा दूसरों को रास्ता दिखाने के काम आते हैं।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

अटरू में ही राज्य सरकार की भ्रमणशील चिकित्सा इकाई का भी एक शिविर चल रहा था। शिविर में एक स्त्री अचानक बेहोश हो गई, सबको यही लगा कि स्त्री का बच पाना मुश्किल है। नारायण सेवा का भी शिविर पास ही लग रहा था, यहां के डाक्टरों ने जाकर स्त्री को देखा और कुछ आवश्यक इन्जेक्शन लगाये तो स्त्री बच गई। भ्रमणशील इकाई के पास इतने साधन नहीं थे मगर इस घटना से नारायण सेवा का नाम हो गया। हर कोई इसकी भूरि भूरि प्रशंसा करने लगा।

संस्था का कार्य ज्यूं ज्यूं बढ़ता जा रहा था, खर्च भी उसी के अनुपात में बढ़ रहा था लेकिन रुपयों की आवक उसके अनुसार नहीं बढ़ रही थी, इस कारण बार भयंकर तंगी का सामना करना पड़ता था। एक बार तो स्थिति यह हो गई कि संस्थान के पत्रक डाक से भेजे जाने थे मगर डाक टिकिट तक के पैसे नहीं थे। कैलाश की यह स्थिति थी कि किसी को कहे भी तो क्या कहें, अगर कहे तो भी क्या कोई उसकी बात का यकीन करेगा। अब तक नारायण सेवा संस्थान सेवा के क्षेत्र में एक स्थापित नाम हो चुका था। दूर दूर तक इसकी लोकप्रियता फैल चुकी थी। कैलाश का हर संभव प्रयास रहता था कि इस नाम को मिटने नहीं देना है, कठिनाइयां चाहे कितनी भी आयें।

कैलाश को जब उसके ही किसी हितैषी ने कहा कि इतने सारे पत्रक भेजते हैं, इनमें से कई ऐसे है, जिनसे कभी कोई सहायता प्राप्त नहीं हुई, इन लोगों को पत्रक भेजना बन्द क्यूं नहीं कर देते। कम से कम डाक के पैसे तो बचेंगे। कैलाश इसके लिए तैयार नहीं था, वह इस मत का था कि पत्रक पढ़ कर किसी का मन पसीज गया और उसने दया का कोई कार्य कर दिया तो भी पत्रक भेजना सफल है।

अंश - 188

अमरूद के फायदे

हर मौसम में सबसे आसानी से उपलब्ध होने वाला फल है अमरूद। यही वजह है कि इसकी उपेक्षा भी सबसे अधिक होती है और इसके फायदों की अनदेखी की जाती है। इसमें कैलोरी काफी कम मात्रा में होती है। एक 50 ग्राम के अमरूद में 40 कैलोरी होती है। फाइबर की अधिकता आँतों की सफाई के लिए जरूरी होती है। अमरूद में एस्ट्रिंजेंट का होना पेट व आँतों में संक्रमण करने वाले बैक्टीरिया की उत्पत्ति को रोकता है।

यह एसिडिटी की समस्या को कम करता है। अमरूद मधुमेह पीड़ितों के लिए भी फायदेमंद है। यह फल रक्त शर्करा को धीरे धीरे ग्रहण करता है। अमरूद में विटामिन सी प्रचुरता में होता है। एक औसत अमरूद में संतरे से चार गुणा अधिक विटमिन सी होता है। विटामिन सी इम्युनिटी यानी रोगों से लड़ने की क्षमता को मजबूत बनाता है। कोलेजन का संतुलन बना रहता है, जिससे त्वचा ढीली नही पड़ती।

अमरूद के छिलके व उसकी निचली परत में सबसे अधिक गूदा होता है, इसलिए इसे खाना न भूलें। अमरूद में प्राकृतिक एंटीऑक्सीडेंट इलाजिक एसिड होता है, जो कैंसररोधी गुणों से भरपूर है। इसमें बी कॉम्पलेक्स विटामिन और मैग्नीशियम और ताँबा आदि मिनरल होते हैं। इसमें पोटेशियम भी प्रचुरता में होता है। इसे कच्चा व पकाकर दोनों तरह से खाया जा सकता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

बाबूजी घासी राम जी साहब आपने लिखा था।

बड़ी बड़ी गांठा गाबा री,
बांध बांधा ने लावे रे।
नवा घुलाकर लाड़ प्यार सूं,
नान्या ने पहनावे रे।।

आओ बाबूजी ओमजी आर्य साहब, जगदीश जी आर्य साहब पधारो–पधारो। आलोक विद्यालय की बस में विराजो। एक घंटे का रास्ता है– झाड़ोल का। परिचय कराइए साहब। अपना अपना परिचय कराते जाइए। माईक लीजिए साहब। अरे! कैलाश जी आप भी बैठिए। नहीं मैं तो खड़ा हूँ। ड्राईवर साहब की पास की सीट के थोड़ा दूर लंबी रेलिंग है, उस रेलिंग में हाथ डाल दिया।पूज्य बाई साहब भी बैठी है सोहनी देवी जी पूज्य बापूजी साहब श्रीमान मदन लाल जी अग्रवाल साहब।

बेला अमृत आ गई,
आलसी सो रहा।
बन अभागा, साथी सारे,
जगे तूं न जागा।।
हंस का रूप था,
गंदला पानी पिया, बनके कागा।
साथी सारे जगे, तूं न जागा।।

ये शरीर के जागने से नहीं है। ये बुद्धि के जागने से भी नहीं है। बुद्धि की अपनी सीमा है। अरे! छः महीने पहले ध्यान क्यों नहीं आया? छः महीने पहले अभी वाला ध्यान आ जाता तो ऐसा कर लेते। उस समय बुद्धि इतनी ही थी भाई। बुद्धि की भी अपनी सीमा है, लेकिन प्रज्ञा जगानी है, स्थितप्रज्ञ बनना है। वो प्रज्ञा जो सत्य का अनुसंधान कर दे। सत्य यह है कि न माला चाहिए न फोटोग्राफी के चित्र चाहिए। न विडियो चाहिए, प्रेम चाहिए, स्नेह चाहिए, ऐसा आनन्द जो परम आनन्द हो। ऐसा सत्य जो परम सत्य हो। अंतर मन की गहराइयों में उतर कर के राग द्वेष से विहीन हो जाना, जो भी संवेदना चल रही है उसमें न सुख की अनुभूति करना, ना दुःख की अनुभूति करना। न नाराज होना। इसकी साधना विपश्यना से करना। उस समय तो सीखी भी नहीं थी। पिछले जन्मों की कृपा रही होगी। इस जन्म में ऐसे पूज्य पिताजी का रामायण का ज्ञान, माताजी की कृपा, राजमलजी भाई साहब की अति कृपा, वाह! कैलाश, ठाकुर जी ने करवा दिया–लाला।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 315 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक: कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व: नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल: ई, डी-71 बापा रावल नगर, हिरण मगरी सेक्टर-6, उदयपुर मुद्रक: न्यूटेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर -3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियों का गुडा, उदयपुर सम्पादक: लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल: mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं.: RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं.: RJ/UD/29-154/2021-2023